गिरिराज अग्रवाल

दिल्ली में अमेरिकी रोबोट

अमेरिकी रोबोट द विंसी की मदद से अब भारत में भी प्रोस्ट्रेट कैंसर की सर्जरी के लिए अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल शुरू हो गया है। कंप्यूटर तकनीक और रोबोट के मेल ने डॉक्टरों का काम तो आसान कर ही दिया है, मरीजों को भी अस्पताल में कम समय बिताना पड़ रहा है। नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में जुलाई के तीसरे हफ्ते से अब तक इस तकनीक से 30 से ज्यादा ऑपरेशन किए जा चुके हैं।

साभार: नर्मदा पी. गुप्ता

रोबोट सर्जरी में सिद्धहस्त हेनरी फोर्ड हॉस्पिटल के डॉ. मणि मेनन (बाएं) और एम्स के यूरोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. नर्मदा पी. गुप्ता।

एम्स के यूरोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. नर्मदा पी. गुप्ता बताते हैं, ''भारत में अब तक रोबोट तकनीक का इस्तेमाल हृदय शल्य चिकित्सा में ही होता रहा है। लेकिन चार भुजाओं वाले अत्याधुनिक द विंसी रोबोट के जरिये हमने इसे प्रोस्ट्रेट कैंसर, ब्लैडर के कैंसर और गुर्दे के अवरोधों से जूझ रहे मरीजों के लिए भी मुहैया करा दिया है।'' इस तकनीक में मरीज के जिस हिस्से का ऑपरेशन किया जाता है, उसका चित्र रोबोट में लगे कैमरे के जरिये कंप्यूटर पर दिखाई देता है जिसे वास्तविक आकार से कई गुना बड़ा कर देखा जा सकता है। सर्जन कंप्यूटर पर दिख रहे त्रिविमीय चित्र का ऑपरेशन करता है और रोबोट उसे हूबहू मरीज के शरीर में अंजाम देता है। इसके कारण ऑपरेशन की सटीकता बहुत बढ़ जाती है। रोबोट की भुजाओं को शरीर में प्रवेश कराने के लिए सिर्फ एक सेंटीमीटर के छेद करने पड़ते हैं जबकि पारंपरिक सर्जरी में नौ इंच तक के चीरे लगाने पड़ते थे।

डॉ. गुप्ता के अनुसार, ''जहां मरीज को पहले एक हफ्ते से भी ज्यादा समय अस्पताल में गुजारना पड़ता था, वहीं उसे अब सिर्फ 24 से 48 घंटे में अस्पताल से छुट्टी मिल जाती है।'' रोबोट तकनीक से सर्जरी के प्रशिक्षण के लिए डॉ. गुप्ता और उनके विभाग के अन्य डॉक्टर डेट्रोइट के हेनरी फोर्ड अस्पताल में गए। वहां इन लोगों ने रोबोट सर्जरी विशेषज्ञ प्रो. मणि मेनन के नेतृत्व में रोबोटीय यूरोलॉजी सर्जरी के गुर सीखे। डॉ. मेनन हेनरी फोर्ड अस्पताल में यूरोलॉजी विभाग के प्रमुख हैं। एम्स में रोबोट सर्जरी की शुरुआत के मौके पर वह दिल्ली भी आए थे।

हेनरी फोर्ड हॉस्पिटल के यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. महेंद्र भंडारी कहते हैं, ''भारत में रोबोट सर्जरी का भविष्य बहुत अच्छा है। हमें विश्वास है कि आने वाले दिनों में रोबोट की कीमत कम होगी और यह सुविधा भारत के अन्य संस्थानों में भी पहुंचेगी।'' डॉ. गुप्ता के अनुसार डॉक्टर भी इसमें कम थकते हैं जिससे वे ज्यादा क्षमता के साथ काम कर सकते हैं। रोबोट और उसके साथ लाई गई सामग्री पर नौ करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। एक सर्जरी पर लगभग 75 हजार रुपये चिकित्सा सामग्री पर अतिरिक्त खर्च करने पड़ते हैं।

यूरोलॉजी के क्षेत्र में रोबोट सर्जरी के प्रशिक्षण के लिए भी द विंसी का इस्तेमाल किया जाएगा। इच्छुक विशेषज्ञों को इसके गुर जानने में एम्स की टीम मदद करेगी। रोबोट सर्जरी शुरू होने के मौके पर एम्स के ऑपरेशन थियेटर से सर्जरी का सीधा प्रसारण संस्थान के जवाहरलाल नेहरू ऑडिटोरियम में किया गया जहां लगभग 150 यूरोलॉजी विशेषज्ञों ने ऑपरेशन को 3डी चश्मों की मदद से स्क्रीन पर देखा। □